B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A. (Hons) Part-I Paper-II

1
7-10-2020

Dr. S.K. Singh
Dept of Economics

ग्रामीण साख या कृषि वित्त से अर्थ
(MEANING OF RURAL CREDIT OR AGRICULTURAL FINANCE)

ग्रामीण साख से अर्थ उस साख से है जिसकी आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रो मे होती है। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रो में अधिकांश निवासी कृषि पर ही निर्भर होते है अतः ग्रामीण साख का सामान्य अर्थ कृषि साख से लगाया जाता है।
कृषि साख से अर्थ उस साख से है जिसकी आवश्यकता कृषि कार्य करने मे होती है। यह आवश्यकता बीज खाद व यन्त्र क्रय करने या मालगुजारी देने या कृषि सम्बंधी अन्य कार्य करने के लिए हो सकती है। इस (कृषि वित्त) की पूर्ति साहूकार, सहकारी साख संस्थाएँ, भूमि विकास बैंक, भूमि बन्धक बैंक, व्यापारिक बैंक, सरकार व अन्य वित्तीय निगमो के द्वारा की जाती है।
ग्रामीण बैंकिंग से अर्थ ग्रामीण जनता को उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओ से है।

भारत मे कृषि वित्त या साख की आवश्यकता
(NEED OF AGRICULTURAL FINANCE OR CREDIT IN INDIA)

भारत में कृषि की वित्तीय आवश्यकताओं या ग्रामीण बैंक या साख की आवश्यकताओं को निम्न तीन भागो में वर्गीकृत किया जा सकता है।
(i) अल्पकालीन साख - भारत मे कृषि कृषक को बीज, उर्वरक, चारा, श्रमिको को मजदूरी तथा अन्य तत्कालीन आवश्यकताओ की पूर्ति करने के लिए अल्पकालीन साख या ऋण की आवश्यकता होती है। इस साख या ऋण की अवधि 15 माह तक होती है। जब फसल काट ली जाती है तो ऐसे ऋण को चुका दिया जाता है।
(ii) मध्यमकालीन साख - कृषक को अपनी भूमि मे सुधार के लिए कुछ साख ऋण की आवश्यकता होती है। जैसे कृषि उपकरण क्रय करने के लिए या सिंचाई व्यवस्था करने या पशु क्रय करने के लिए। ऐसे ऋण की अवधि 15 माह से लेकर 5 वर्ष तक की होती है।
(iii) दीर्घकालीन साख :- इस साख की आवश्यकता उस समय होती है, जबकी कृषक नयी भूमि क्रय करके अपने भू-खण्ड की मात्रा बढ़ाना, पुराने ऋण को चुकाना, भूमि मे कोई स्थायी सुधार करना या कृषि के लिए मूल्यवान मशीनरी (जैसे ट्रैक्टर) आदि खरीदना चाहता है।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - II Paper - IV Economics
7-10-2020

टकसाली समता नियम (MINT PARITY THEORY)

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

विदेशी विनिमय दर के निर्धारण का टकसाली समता नियम स्वर्णमान देशों की मुद्रा इकाइयों के मध्य विनिमय दर के निर्धारण की व्याख्या प्रस्तुत करता है। जब दोनों देशों में स्वर्णमान हो तो उनकी मुद्रा इकाइयां या तो दी हुई शुद्धता तथा भार के स्वर्ण की होती है अथवा वे एक निश्चित दर पर ही हुई शुद्धता के बराबर स्वर्ण में परिवर्तनीय होती है। स्वर्णमान के अन्तर्गत देश निश्चित कीमतों पर स्वर्ण का क्रय तथा विक्रय करके स्वर्ण के मूल्य के आधार पर अपनी मुद्राओं के मूल्य को बनाए रखते हैं। जिस देश की सरकार (1) एक निश्चित कीमत पर असीमित मात्रा में स्वर्ण का क्रय तथा विक्रय करती है; तथा (2) अपने देश के बाहर तथा अन्दर अप्रतिबंधित स्वर्ण के प्रवाह की अनुमति देती है, उस देश की मुद्रा को स्वर्णमान पर आधारित कहा जाता है। (1) तथा (2) का व्यावहारिक अर्थ उस देश से है, जिसे यह ज्ञात है कि घरेलू मुद्रा के बदले में कितना स्वर्ण प्राप्त हो सकता है तथा दूसरे देश को निर्यात करने पर इस स्वर्ण से कितनी मुद्रा का क्रय करेगे। इन शर्तों के अन्तर्गत ही एक निश्चित टकसाल भार की सीमाओं के अन्तर्गत दो स्वर्णमान देशों की मुद्राओं के मध्य विनिमय दर में उच्चावचन होंगे। टकसाल भार का अर्थ विदेशी विनिमय दर को दो मुद्रा इकाइयों की धातु मात्राओं के भार के अनुपात निर्धारित करने से है। विदेशी विनिमय दर के टकसाल समता नियम को केवल उन देशों में लागू किया जा सकता है जिनमे एक समान धातुमान जिसे व्यवहार में स्वर्णमान या रजतमान के रूप में लिया जाता है, हो। इस प्रकार, एक स्वर्णमान तथा एक रजतमान देश के मध्य कोई निश्चित टकसाल भार नहीं होता है।

प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व सन् 1920 ई० के पश्चात ब्रिटेन तथा अमरीका में स्वर्णमान विद्यमान था। उस समय ब्रिटेन की अशरफी का स्वर्ण-मूल्य 113.0016 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण तथा अमरीकी डालर का स्वर्ण-मूल्य 23,2200 ग्रेन शुद्ध स्वर्ण निर्धारित किया गया था। टकसाली समता नियम के आधार पर अमरीकी डालर तथा ब्रिटेन की अशरफी के मध्य विनिमय दर के बीच स्वर्ण भार-अनुपात का उल्टा ही टकसाल भार है, जो उस समय 113.006 ' 23.2200 था अर्थात् 4.866 अमरीकी डालर ब्रिटेन की एक स्वर्ण अशरफी के बराबर था।

B.M.A College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-II Paper-III Economics

Page No. 1
Date 7-10-2020

D.S.K.Singh
Deptt of Economics

विनियोग गुणक का अर्थ एवं परिभाषा:

हम जानते हैं कि आय का मुख्य निर्धारक विनियोग है। विनियोग में वृद्धि से आय बढ़ती है और विनियोग में कमी से आय घटती है। अब हम यह जानने की चेष्टा करेंगे कि विनियोग में निश्चित वृद्धि या कमी के फलस्वरूप आय में कितनी वृद्धि या कमी होती है।

कीन्स का विचार था कि "प्रारम्भिक विनियोग के कारण आय में कई गुना वृद्धि होती है।" प्रारम्भिक विनियोग के कारण हुई आय में अन्तिम वृद्धि को ही कीन्स ने विनियोग गुणक कहा है। सरल शब्दों में, गुणक विनियोग में परिवर्तन के कारण आय में होने वाले परिवर्तन का अनुपात होता है। उदाहरण के लिए, यदि विनियोग में 2 करोड़ रुपये की वृद्धि से आय में 10 करोड़ रुपये की वृद्धि होती है तो गुणक 5 होगा परन्तु यदि विनियोग की इस वृद्धि से आय में 5 करोड़ रुपये की वृद्धि होती है तो गुणक 2.5 होगा। इस प्रकार विनियोग में प्रारम्भिक वृद्धि और कुल आय में अन्तिम वृद्धि के सम्बंध को गुणक की संज्ञा दी जाती है। कीन्स का कहना है कि विनियोग से प्रारम्भिक वृद्धि उपभोग में परिवर्तन का होगी जो कि कुल आय में वृद्धि का कारण बनेगी। सरल रूप में इसे इस प्रकार रखा जा सकता है:

विनियोग में परिवर्तन (प्रारम्भिक कारण) (changes in investment)
↓
उपभोग में परिवर्तन (change in consumption)
↓
कुल आय में परिवर्तन (अन्तिम परिणाम) (change in aggregate income)

कीन्स ने विनियोग गुणक को K का नाम दिया है।

कीन्स (Keynes) के अनुसार, "विनियोग गुणक हमें यह स्पष्ट कराता है कि जब कुल विनियोग में वृद्धि होती है तो आय उस राशि की बढ़ेगी जो विनियोग वृद्धि के K गुना हो।"

हैन्सन (Hansen) के अनुसार, "कीन्स का विनियोग गुणक वह गुणांक है जिसका सम्बंध विनियोग वृद्धि और आय वृद्धि के मध्य से है।"

इस प्रकार स्पष्ट है कि गुणक विनियोग में हुई वृद्धि का कारण आय में वृद्धि का अनुपात है। इसलिए कीन्स का गुणक विनियोग या आय गुणक के नाम से जाना जाता है।

B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)

B.A. (Hons) Part - I Paper - I

7.10.2020

लगान का आधुनिक सिद्धान्त

Dr. S.K. Singh
Dept of Economics

MODERN THEORY OF RENT

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों, विशेषकर रिकार्डो का लगान सिद्धांत भूमि तक ही सीमित है, परन्तु वर्तमान अर्थशास्त्री इस बात से सहमत नहीं है। उनका मत है कि उत्पत्ति के शेष साधन भी भूमि की भाँति स्थिर या सीमितता का गुण (Quality of fixity or Limitedness) भूमि-तत्व (Land-element) का गुण अर्जित कर सकते है, इसलिए शेष साधनों को भी लगान मिल सकता है। अतः आधुनिक सभी अर्थशास्त्री इस मत से सहमत है कि उत्पत्ति का प्रत्येक साधन लगान प्राप्त कर सकता है और लगान का आधुनिक सिद्धांत एक सामान्य सिद्धांत (General Theory) है।

आधुनिक सिद्धांत का आधार (Basis of the Modern theory)

लगान के आधुनिक सिद्धांत का आधार साधनों की विशेषता (Specificity of factors) है। इस सन्दर्भ में आस्ट्रियन अर्थशास्त्री वॉन वीजर (Von Wieser) ने उत्पत्ति के साधनों को दो भागों में बांटा है:

(i) पूर्णतया विशिष्ट साधन (Perfectly Specific factors) तथा
(ii) पूर्णतया अविशिष्ट साधन (Perfectly Non-specific factors)।

पूर्णतया विशिष्ट साधन वे है, जिनका केवल एक ही प्रयोग किया जा सकता है। इसलिए विशिष्ट साधनों की अवसर लागत (opportunity cost) शून्य होती है। पूर्णतया अविशिष्ट साधन वे है, जिनके एक से अनेक प्रयोग किये जा सकते है, अथवा जो साधन पूर्णतया गतिशील हो। विशिष्ट साधनो के सम्बंध मे दो बातें ध्यान देने योग्य है: (1) विशिष्टता एक गुण है, इस गुण को कोई भी साधन कभी भी प्राप्त कर सकता है। जो साधन आज विशिष्ट है कल वह अविशिष्ट हो सकता है। उदाहरण के लिए भूमि का वह टुकड़ा जिसमें कपास की खेती की जा रही है, फसल काटने तक वह विशिष्ट रहेगा। फसल काटने के उपरान्त उसमे मकान बना सकते है, बगीचा लगाया जा सकता या किसी अन्य फसल को बोया जा सकता है, इसलिए अब हम इस भूमि के टुकड़े को अविशिष्ट कह सकते है।